सत्य साहित्य

वर्ष 1 / अंक 1
जुलाई 2016
Year 1/ Vol 1
July
2016

सत्य साहित्य, श्री रामशरणम् इन्टरनेशनल सेन्टर, नई दिल्ली की एक त्रैमासिक पत्रिका

सर्वशक्तिमते परमात्मने श्री रामाय नमः

वन्दे रामं सच्चिदानन्दम्।
परम पावनं प्रियतमरूपम्
परमेष्टं शुभ शान्ति स्वरूपम्।
सर्वाधारं महा सुखकन्दम्
शरणागत जन पालक शरणम्
विघ्न हरं सुख शान्ति करणम्
परम परं मंगल अरविन्दम्॥

(परम पूजनीय श्री स्वामी सत्यानंद जी महाराज की भजन डायरी से)

इस अंक में पढ़िए

- भजन
- नमो नमः गुरुदेव तुमको नमो नमः!
- व्यास पूर्णिमा पर निवेदन
- व्यास पूर्णिमा के सुअवसर पर : भक्ति प्रकाश : कृतज्ञता
- परम पूजनीय श्री स्वामी जी महाराज के संस्मरण
- 'मैं क्या माँगू माँ से'?
- गुरु-कृपा
- परम पूजनीय श्री महाराज जी के पत्रों के अंश
- अनुभूतियाँ
- विभिन्न केन्द्रों पर सम्पन्न कार्यक्रम
- कैलेंडर
- बच्चों के लिए

सत्य साहित्य
मूल्य (Price) ₹ 5

नमो नमः गुरुदेव तुमको नमो नमः!

7 जुलाई 1925 : व्यास पूर्णिमा : परम पूजनीय श्री स्वामी सत्यानन्द जी महाराज के परमात्मा से साक्षात्कार का पावन मांगलिक दिवस।

29 जुलाई 1993 : परम पूजनीय श्री प्रेम जी महाराज के देह त्याग अर्थात् स्थूल से विराट में समाहित होने का मंगल दिवस।

2 जुलाई 2012 : परम पूजनीय श्री विश्वामित्र जी महाराज के जीवन यात्रा की पूर्ति व विदेह होकर सूक्ष्म में समा जाने का पावन दिवस।

'भूतो न भविष्यति' महान गुरुत्रयी, निस्पृही संतजनों को बारम्बार भावपूरित कोटिशः चरण वन्दना।।

7 जुलाई 1925 को व्यास पूर्णिमा के पावन मांगलिक पर्व के दिन हिमालय के डलहौज़ी में निर्जन एकान्त स्थान पर लगभग एक माह तक अनवरत साधना के बाद, परमात्म–मिलन की विकलता लिए हुए सतत् प्रार्थनारत परम पूजनीय श्री स्वामी सत्यानंद जी महाराज को 'रा' और 'म' अक्षरमयी "राम" रुप का तेजोमयी दर्शन हुआ। इसके पूर्व बहुत ही सुन्दर और आकर्षक स्वरों में "राम" शब्द सुनाई दिया। आदेशात्मक शब्द भी आए – "राम भज, राम भज, राम राम" (*प्रवचन पीयूष*, परम पूजनीय श्री स्वामी जी महाराज की जीवन–यात्रा, पृष्ठ 8)

तब कौन जानता था कि यह अनमोल, अविस्मरणीय, महान पल – विश्व की अनूठी, विशुद्ध आध्यात्मिक संस्था 'श्रीरामशरणम्' की स्थापना के अर्थात सद्धर्म के अभ्युदय के मूल स्रोत बनेंगे? पर ये हुआ और राम नाम के प्रचार, प्रसार व विस्तार के कारक व कारण बने ये अद्वितीय, ऊर्जावान पल। श्रीरामशरणम् की आधारभूत चेतनशक्ति में विराजमान है दैदीप्यमान ऊर्जा का यह अक्षत, अनंत स्रोत– जो श्री स्वामी जी महाराज को परम धाम से अवतरित हुआ है। श्री स्वामी जी महाराज द्वारा रचित (अवतरित) ग्रन्थों में यही पावन ऊर्जा तरंगित हो रही है।

नाम दीक्षा द्वारा तीनों गुरुजनों ने इसी अलौकिक प्रसाद को साधकों में खुले हाथों से उदारतापूर्वक बाँट कर कृतकृत्य किया है। अब भी बाँट रहे हैं और अधिक सक्रियता के साथ।

श्री स्वामी जी महाराज की अलौकिक, पारखी दिव्य दृष्टि ने परम पूजनीय श्री प्रेम जी महाराज को अपना सुयोग्य उत्तराधिकारी चुन कर उन्हें सिखाया, सिधाया और आध्यात्मिक जगत की सभी प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष उपलब्धियों से परिपूर्ण कर दिया। परम पूजनीय श्री प्रेम जी महाराज ने इन उपलब्धियों को गुप्त रखते हुए, गुरुमुखी होकर, मौन, निष्काम सेवाभावी, राम नाम के अजपा जापक के रुप में गुरु द्वारा रुपांतरित की गई शक्तियों को और अधिक विकसित कर लिया। गुरु शिष्य परम्परा में वह उन विरले शिष्यों में से हैं जिनकी आध्यात्मिक उपलब्धियों व सेवाभाव का, सांकेतिक रुप से गुरुदेव श्री स्वामी जी महाराज ने स्वयं श्रीमुख से, गौरव के साथ बखान किया है। (*प्रवचन पीयूष*, पृष्ठ 270, 297, 311, 362 आदि)

परम पूजनीय श्री प्रेम जी महाराज ने भी सदैव श्री स्वामी जी महाराज व उनकी वाणी को ही आगे रखा और उनके द्वारा बनाए गए अनुशासन व नियमों को मान देते हुए स्वयं भी अक्षरशः पालन किया। (*प्रवचन पीयूष*, पृष्ठ 497—500, 514—522 आदि)

29 जुलाई 1993 को दैहिक चोला त्यागने के पूर्व उन्होंने (कछुए की भान्ति दूर रहते हुए भी) अपनी प्रबल अंतर्चेतना से अंतरंग शिष्य परम पूजनीय श्री विश्वामित्र जी महाराज को सिधाया, मनाली में कठिन तपस्या व एकान्त साधना कराई और राम नाम के अतुलित बल, शक्ति, प्रभाव व ऊर्जा से उन्हें परिचित करवा कर, स्वयं को मिली आध्यात्मिक पूंजी में अपनी कमाई जोड़ कर, अपना सर्वस्व सौंप दिया।

परम पूजनीय श्री विश्वामित्र जी महाराज ने दोनों गुरुजनों से विरासत में मिले अक्षत आध्यात्मिक कोष में कई गुना वृद्धि करते हुए देश—विदेश में जन जन तक राम राम के अमृत प्रसाद को बाँटा। एक सच्चा, सरल, विनम्र, निष्काम, निरभिमानी भक्त व गुरुमुखी, अनुशासनप्रिय शिष्य ही गुरुजनों द्वारा अपनाई गई सीधी राह पर चल कर उनके द्वारा रोपे गए बीज को विशाल वट वृक्ष बना सकता है, यह अनुपम उदाहरण उन्होंने हम सब के समक्ष रखा है।

2 जुलाई 2012 को उन्होंने देह त्याग दिया, किन्तु वे सबके दिलों में विराजमान हैं। जीवनपर्यन्त राम काज करते हुए उन्होंने सभी को निरहंकारी, पवित्र, गुरुमुखी जीवन जीने की सीख दी है। ओजस्वी दिव्य वाणी में उनके प्रेरक प्रवचन सबको राह दिखा रहे हैं। सब की समस्याओं का निदान उनमें मिल जाता है, यह सभी की अनुभूति है।

तीनों महान गुरुजन सूक्ष्म रुप में हम सबके अंग संग हैं, यह केवल शब्दों के द्वारा नहीं अपितु हृदय की गहराई से हमें महसूस करना चाहिए। **गुरुजनों के अनुसार - गुरु शरीर नहीं भाव है। गुरु कभी मरता नहीं है। गुरु को शरीर की सीमा में नहीं बांधा जा सकता।** हमारे तीनों परम प्यारे गुरुजनों ने स्वयं की समाधि या मूर्ति बनाने को नहीं कहा। अपितु समाधि बनवाने वालों की आलोचना की है। (*प्रवचन पीयूष*, पृष्ठ 319)। अतः जड़ अर्थात् किसी पत्थर की पूजा या गुरुजनों की मूर्ति की स्थापना से नहीं अपितु गुरुजनों की सीख को जीवन में अक्षरशः उतार कर, सत्यनिष्ठ जीवन जीकर हम उन्हें प्रसन्न कर सकते हैं, उनके आशीर्वाद प्राप्त कर सकते हैं। इसलिए हमें कभी भी मनोमुखी नहीं होना है। वे सर्वत्र विद्यमान हैं और हमारे प्रत्येक कर्म पर उनकी नज़र है, यह हमेशा हमें याद रहे।

सदा स्मरणीय तीनों परम पूजनीय गुरुजनों को पुनः कोटि कोटि प्रणाम !

(एक साधक के विचार) ■

व्यास पूर्णिमा पर निवेदन

आज का पुण्य पर्व हमारे धर्म में गुरु–जनों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने का दिवस है, जिन्होंने हमारी अन्तःकरण रुपी भूमि में राम–मन्त्र का बीज स्थापित किया, अपने रचित ग्रन्थों द्वारा हमारा अन्धकार दूर किया तथा वर्णित साधना प्रणाली द्वारा सुखी एवं शान्त जीवन व्यतीत करने की कला को सिखाया और अपने मुखारविन्द से समय समय पर हमारा मार्ग–दर्शन किया। आज का दिन गुरु–शिष्य के बीच आध्यात्मिक सम्बन्ध स्मरण करने के लिये, नाम दीक्षा के समय उन के साथ किये वायदों को याद करने के लिये नियत है। जो मेरे गुरुजनों ने कहा है उनके कथनों की पुनरावृत्ति करके तथा उनके आदेशों, उपदेशों को जीवन में उतारने का पुनः प्रण करके, उनके श्री चरणों में श्री सुमन अर्पित करते हैं।

1. रामनाम का महामांगलिक महामन्त्र मेरे हृदय में विराजमान है, यह मनो भावना दिन प्रति दिन सुदृढ़ होती जाये, साधक का विश्वास अटूट हो, कि इस नाम का वाच्य नामी भी वहीं विद्यमान है। अब मेरा हृदय परमेश्वर का सिंहासन है, मेरा तन राम–मन्दिर है जिसमें तेजोमय परम पुरुष सुशोभित है। वही मेरी पालना करता है और मेरे सब साधन राम कृपा से स्वतः सिद्ध हो रहे हैं। जब मैं श्री राम चरण शरण में सर्वभाव से समर्पित हो गया हूँ, तो मुझे किसी भी प्रकार की चिन्ता नहीं करनी।

2. साधक की यह धारणा ध्रुव समान हो कि जैसे तन में औषधि काम करती है, ऐसे ही मेरे विकारों, मेरी चिन्ताओं, त्रुटियों को, मेरे मलिन विचारों

की व्याधियों को दूर करने का काम श्री राम नाम कर रहा है।

3. राम नाम रुप कल्पतरु का बीज, जो हृदय भूमि में बोया गया है, वह मेरी सफलताओं के रुप में अंकुरित, पत्रित, पुष्पित एवं फलित होता जायेगा। मेरा तो श्री राम कृपा पर भरोसा रखना ही काम है।

इसलिए उपासक को अपने भीतर श्री रामनाम जाग्रत करना चाहिये, उसे ऐसा प्रतीत हो कि चलते-फिरते, उठते-बैठते, काम-काज करते हुए भीतर राम नाम स्वयमेव जपा जा रहा है।

4. याद रखें, भगवत्कृपा का अवतरण उसी जन पर होता है जो भक्ति भाव भरे भावों से राम नाम को जपता है, एकाग्र मन हो कर ध्यान तथा चिन्तन करता है, परा प्रीति से राम–नाम पर निर्भर है, नामोपासना को ही सर्वश्रेष्ठ एवं संपूर्ण साधना समझता है।

5. साधारण जन को श्री राम–नाम केवल शब्द तथा नाम का जप उस शब्द को बार बार रटना ही प्रतीत होता है परन्तु नामोपासक तो उसे आन्तरिक विकास का, आत्म जागृति का, आत्मोन्नति का, मल, विक्षेप, आवरण के नाश का और पाप–ताप के विनाश का तुलनातीत उपाय ही जानें।

राम नाम जब जगे अभंग,
चेतन भाव जगे सुख-संग।
ग्रन्थी अविद्या टूटे भारी,
राम लीला की खिले फुलवारी।।

राम–नाम का उपासक निज स्वरुप को प्रकट कर लेता है। जहाँ वह स्वयं होता है, वहीं साधक परमेश्वर को प्रकाशमान कर लिया करता है, उसकी अनन्य भक्ति के अधीन आप ही आप प्रभु अभिव्यक्त हो जाते हैं।

6. इसलिए उपासक को अपने भीतर श्री रामनाम जाग्रत करना चाहिये, उसे ऐसा प्रतीत हो कि चलते–फिरते, उठते–बैठते, काम–काज करते हुए भीतर राम नाम स्वयमेव जपा जा रहा है। तब समझो आत्म–सत्ता जग गई है, मंत्र सिद्ध हो गया है और उस पर राम–कृपा अवतरित हो गई है। तब उपासक काल चक्र से पार पा जाता है।

तारक - मंत्र राम है,
जिसका सुफल अपार।
इस मंत्र के जाप से,
निश्चय बने निस्तार।।

हमने गुरुजनों को वचन दिया हुआ है कि परिस्थिति कैसी भी हो, हम कहीं भी हों, कैसे भी हों, हम राम–नाम जपते रहेंगे, ध्यान के लिये नियमपूर्वक बैठते रहेंगे, उन द्वारा रचे ग्रन्थों का अध्ययन करते रहेंगे तथा सत्संग के माध्यम से परस्पर प्रेमपूर्वक जुड़े रहेंगे। आज इसी व्रत को निभाने का पुनः दृढ़ निश्चय करते हैं और उनसे आशीर्वाद माँगते हैं कि परमेश्वर कृपा हम सब पर सदा सदा बनी रहे ताकि उन द्वारा प्रदत्त मंत्र से उस सर्वोच्च पद को प्राप्त करलें जिसके लिये जीवन मिला है।

पूज्यपाद स्वामी जी के समस्त परिवार को मेरी चरण वन्दना, शुभ एवं मँगल कामनाएँ!

चरण धूलि का कण,

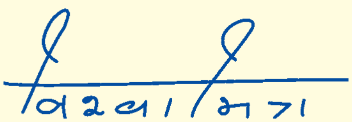

(24 जुलाई, 2002 व्यासपूर्णिमा पर परम पूजनीय श्री महाराज जी का निवेदन)

(On the occasion of Guru Purnima, the attention of Sadhaks is drawn to Param Pujaniya Swami Ji Maharaj's message : **My entire Life Story is manifest in Bhakti Prakash. Whoever is desirous of knowing about it, may study it. Whatever have been my Life's Spiritual Attainments and Message, those I have already embodied in my books. They are my Message.** (*Pravachan Piyush,* page 481)*

It is with this perspective, that the following text on Gratitude (*Bhakti Prakash,* page 102) is given in translation.)

GRATITUDE
कृतज्ञता

Grateful to Him will I remain, acknowledging my utter indebtedness.
Benevolent grace who did bestow, in His excessive fondness.

Gave supremely divine Lord's Name, Lamp of Illumination.
Facilitating all-round improvement and Self-realization.

He who did introduce Ram, cognizance of righteous action.
At His Lotus Feet I pay, homage and prostration.

That Saintly Soul I do thank, respect and revere.
Pure knowledge of the Self, awareness who did confer.

Ever will I remain indebted, for His benevolent kindness.
My every pore is beholden, expresses heartfelt gratefulness.

At the door of His hermitage, my body and life dedicate.
Saluting Him with great respect, again and again venerate.

To drifting person the fortuitous ship, of Naam-jaap bestowed.
Alms giving shelter of the Word, all sins destroyed.

Administering herb of wondrous Name, cured disease of transmigration.
Removing doubt and delusion, conquered death lamentation.

With wish-fulfilling stone of Lord's Name, tension disintegrated.
Which gave contentment of mind, restlessness eliminated.

The Saint who initiates with Holy Name, I offer my dedication.
Holding arm who steadies me, tells Ram is destination.

By gaining Holy company, the path automatically unfolds.
Mysteriously dyes in devotion deeply, increasing yearning manifold.

सत्यानन्द

* (एक बार श्री महाराज जी (परम पूजनीय श्री स्वामी जी महाराज) ने कहा,''मेरी सम्पूर्ण आत्म–कथा भक्ति–प्रकाश में है। जो जानना चाहे उसका पाठ करे।'' जो कुछ मेरे जीवन की कमाई और सन्देश है वह सब मैंने पुस्तकों में पहले से ही भर दिया है। वह ही मेरा सन्देश है।' (*प्रवचन पीयूष,* पृष्ठ 481)) ■

मुझे अपने रंग में रंग दो माँ,
मुझे भक्ति रंग में रंग दो माँ।

मैं तो तेरा हूँ तेरा हूँ तेरा हूँ राम,
तू तो मेरा है मेरा है मेरा है राम।

संस्मरण

परम पूजनीय श्री स्वामी जी महाराज के संस्मरण

एक बार स्वामी जी महाराज अचानक बहुत बीमार हुए। साधकों ने स्वामी जी के श्री मुख से नाम की महिमा सुन रखी थी। 1 करोड़ जाप का संकल्प ले लिया। स्वामी जी शैय्या ग्रस्त थे। उनके जाप पर पधारने की आशा बिल्कुल नहीं थी। पर पधारे, कहने लगे,''मैं आपके जाप का प्रभाव दिखाने आया हूँ।'' तत्पश्चात् कई वर्ष और स्वस्थ जीवन बिताया।

(परम पूजनीय महाराज जी की डॉयरी से)

'मैं क्या माँगूं माँ से'?

प्रेम

नरेन्द्र* कालिज में पढ़ता था। वह परमहंस श्री रामकृष्ण जी महाराज के पास जाया करता था। उसके पिता वकील थे, अपनी कमाई से ज्यादा खर्चा करते थे। ऐसे हुआ, पिता स्वर्ग सिधार गए और कमाने वाला कोई था नहीं। घर की हालत इतनी खराब थी कि किराया देने के लिए पैसा नहीं था। मकान मालिक ने कई बार उनका सामान बाहर निकाल कर फैंका और कहा, किराया तुम देते नहीं हो, रहते क्यों हो यहाँ पर, कहीं और जा कर रहो जहाँ किराया न हो।

इन हालात से माँ ने दुखी होकर नरेन्द्र से कहा, तू रामकृष्ण परमहंस जी के पास रोज़ जाता है, कहते हैं वो जो कुछ चाहे करवा सकते हैं। तू क्यों नहीं उनसे कहता कि हमारे घर के हालात सुधरें। बार–बार कहने से दुखी होकर नरेन्द्र जब परमहंस जी के पास आया। उन्हें कहने लगा कि हमारे घर के हालात ऐसे हैं, आप हमारे लिए कुछ कीजिए। परमहंस जी ने कहा, ध्यान में बैठते हैं, तू भी मेरे साथ बैठ जा। तू माँ से माँग लेना, जो तेरा जी चाहे। ध्यान में बैठ गए, जब उठे, परमहंस जी ने पूछा, तूने माँ से माँगा? नरेन्द्र कहने लगा, माँगें उससे जिसको पता न हो। माँ को नहीं पता कि हमारे घर के हालात क्या हैं? मैं क्या माँगूं माँ से?

परमेश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए दूसरों के लिए। अपने लिए परमेश्वर आप ही सब कुछ करता है, आप ही देने वाला है। सुख शान्ति और शक्ति देता है। परन्तु जिन्हें विश्वास नहीं होता, वो कहते हैं कि पता नहीं परमेश्वर हमारी सुनता है कि नहीं सुनता, परमेश्वर सबकी सुनते हैं। सब के अंग संग हैं, हम ही पीछे हट जाते हैं, परमेश्वर तो सब पर कृपा करते हैं। परमेश्वर से अपने लिए कभी कोई न माँगे, दूसरों के लिए माँगें, जो दुखी हो उनके लिए माँगें, जो रोगी हो, किसी के हालात खराब हैं, उसके लिए आप माँगोगे तो उसका भी कल्याण होगा और आपका भी कल्याण होगा।

परमेश्वर श्री राम,
हम तेरी चरण शरण में हैं,
तू सब पर कृपा कर,
कृपा कर, कृपा कर, कृपा कर !

(परम पूजनीय श्री प्रेम जी महाराज जी के श्रीमुख से) ■

* स्वामी विवेकानन्द

गुरु-कृपा

विश्वामित्र

संत बाह्य रुप में तो सबको एक साधारण व्यक्ति ही दिखते हैं, परन्तु एक बात उन सबके लिए निश्चित है, वह यह – कि उनके पास अस्थिर मन जैसी कोई वस्तु नहीं। संत तो बालवत्–सरल एवं स्वैच्छिक होते हैं। चूंकि वे भेदभाव से परे होते हैं तथा अपनी समस्त कामनाओं का विध्वंस कर चुके हैं, अतः उनका हृदय विशाल होता है तथा सबके प्रति प्रेम से प्लावित होता है, सबके प्रति स्नेही होता है। उनके लिए कोई भी अपरिचित नहीं क्योंकि सभी तो उस प्रियतम के ही रुप हैं।

संत की कृपा, जिसे आपने गुरु स्वीकारा है, साधक की आध्यात्मिक उन्नति के लिए अनिवार्य है। प्रश्न यह है कि साधक अपने आपको कृपा प्राप्त करने का अधिकारी कैसे बनाए? मुख्य गुण जो साधक कृपा ग्रहण करने हेतु विकसित करे–वह है उस परमेश्वर की इच्छा के प्रति पूर्ण आत्म–स्वीकृति, जो उसके भीतर आसीन है। दैवी इच्छा के प्रति साधक का आत्म–समर्पण निर्भर करेगा उसकी संसार में बाह्य जीवन के प्रति अभिवृत्ति पर। ऐसे जीना और आचरण करना जिससे गुरु अपने शिष्य पर अति प्रसन्न हो, निश्चित शर्त है जिस द्वारा गुरु कृपा अवश्यंभावी होती है। संत किसका प्रतीक है? धरती पर मानवता एवं समस्त प्राणियों के प्रति उसकी दृष्टि कैसी होती है? उसका हृदय और बुद्धि कैसे काम करते हैं? संत दिव्यता का साकार रुप है। उसकी दृष्टि सार्वभौमिक है। उसका हृदय सभी प्राणियों के प्रति प्रेम तथा कल्याण से परिपूर्ण है। उसकी बुद्धि अविनाशी प्रज्ञा द्वारा प्रबुद्ध है। जैसे ही साधक (जिज्ञासु) ऐसे संत के सादृश्य विकसित होता है, वह संत के वैभव शक्ति एवं कृपा का उत्तराधिकारी बन जाता है।

एक सच्चा साधक अपने जीवन को गुरु के उपदेशों के अनुरुप ढालने से उसे प्रसन्न करने के लिए नित्य तत्पर रहता है। संत ऐसे शिष्य की प्रगति को देख कर अत्यधिक आनन्दित होता है कि उसका हृदय उत्तरोत्तर उदार, विशाल होता जा रहा है तथा वह सभी प्राणियों के प्रति समभाव एवं समदृष्टि है। एक सामान्य भूल जो साधक के द्वारा प्रायः हो जाती है वह है उसकी यह सोच कि मात्र संत के व्यक्तित्व की स्तुति करने से तथा मानव जाति के अन्य सभी सदस्यों तथा संसार के सभी प्राणियों में उसकी (गुरु की) अभिव्यक्ति की अवहेलना करके अर्थात् इन सबको गुरु का द्योतक अवलोकन न करके, वह उच्चतर आध्यात्मिक जीवन के योग्य बन सकेगा। आध्यात्मिक साधक के लिए इस प्रकार की अभिवृत्ति की अपेक्षा, अन्य कुछ भी उसकी प्रगति के लिए हानिकारक नहीं है। एक संत ने अपने प्रेरणावर्द्धक गीत में विशिष्टतया ऐसा कहा है,'' जब आप अपने अभिमान को एक ओर धकेल देते हैं, तो अपने गुरु को सर्वत्र निहारते हैं।'' संत के व्यक्तित्व के साथ चिपके रहना उसका अत्यधिक सम्मान करने से और तब अपने संगी साथियों के प्रति घृणा एवं प्रतिकूल व्यवहार द्वारा उनकी उपेक्षा करना, आप पर कृपा–अवतरण के लिए सहाई नहीं होगा। जितना अधिक आप

अस्वस्थ, विपद्ग्रस्त और व्यथित मानवता के प्रति दयालु, सहायक, एवं करुणावान बनेंगे, उतने ही उस महान सत्य के समीपतर पहुँचते हैं जो आपके भीतर ही विराजमान है। केवल तभी संत वास्तव में प्रसन्न होता है तथा अपना ज्ञान, प्रकाश एवं अपनी कृपा आप पर बरसाता है।

एक और तथ्य जो साधक को भूलना नहीं चाहिए कि गुरु जिसे उसने जीवन में अपना एकाकी–पथ प्रदर्शक एवं स्वामी स्वीकार किया है, वह अपने ही हृदय का इष्ट देव है, यद्यपि आरम्भ में गुरु उसे बाहर से आने वाला व्यक्ति दिखाई देता है। गुरु सर्वव्यापक सत्य है वास्तविकता है, तत्व है – सभी साधकों का आन्तरिक प्रबोधक एवं प्रेरक। यदि कोई साधक सतत् साधना द्वारा मन को लांघने में प्रयत्नशील है, उस आवरण को विच्छिन्न करने में तत्पर है जो उसे तत्व से पृथक् करता है और तब अपने भीतर अन्तरंग में प्रवेश करता है, तभी उसे अनुभूति होगी कि अन्तस्थ में आसीन गुरु ही उसका शासक (नियन्त्रक) प्रोत्साहक, संरक्षक एवं सर्वस्व है। अपने शिष्य के लिए गुरु का व्यादेश है,' मुझे अपने भीतर खोजो (ढूँढो) एवं पाओ। और तब मुझे हर व्यक्ति एवं प्रत्येक वस्तु में निहारो अर्थात् व्यक्ति एवं वस्तु भी गुरु ही है। मैं सभी प्राणियों के हृदय में आसीन हूँ। उनसे प्रेम करना तथा उनकी सेवा करने का अभिप्राय है, : मुझे प्रेम करना तथा मेरी सेवा करना। ऐसा कभी न सोचो कि अपने हृदय को कोमल बनाए बिना, अपनी बुद्धि को प्रबुद्ध किए बिना तथा संसार के कल्याण के हेतु जीवन बलिदान किए बिना, आप कभी भी मेरी कृपा को ग्रहण कर सकोगे अर्थात् यह सब किए बिना गुरु कृपा सम्भव नहीं।''

सभी परिस्थितियों में, चाहे वे कितनी भी कठिन एवं जटिल हों, आप उस अन्तर्यामी से अचूक निर्देश एवं दिशा प्राप्त कर सकते हैं जो आपके भीतर विराजमान है। उनकी आवाज़ हर पग पर स्पष्टतया सुनी जा सकती है। वे आपका पथ प्रदर्शन करेंगे यदि आप अपने आपको उनके हाथों में सौंप देते हो तथा अनवरत स्मरण द्वारा उसके साथ अपने मन को एकस्वर कर लेते हो। आप कहीं भी हैं तथा जिस अवस्था में भी आप हैं, आप उन्हें सहायतार्थ पुकार सकते हैं और आपका मार्ग साफ(स्पष्ट) हो जाता है तथा संरक्षण निश्चित हो जाता है।

इस लेख का उद्देश्य है इस तथ्य पर बल देना कि एक आध्यात्मिक साधक का वास्तविक एवं दिव्य उदार जीवन तक उत्थान तभी सम्भव हो सकता है जब वह अपने जीवन का व्यवहार, आचरण इस प्रकार अनुकूल बनाता है जिस द्वारा आध्यात्मिक गुरु–स्वामी प्रसन्न हो तथा वह गुरु ही उसके जीवन का आन्तरिक प्रेरक एवं मार्गदर्शक है।

गुरु वह है जो साधक की आध्यात्मिक भूख को तृप्त करता (मिटाता) है। यहां तर्क और निजी विचारों (रायों) का स्थान नहीं। अन्यथा अविश्वास तथा संशय उस पर प्रहार करेंगे तथा उसके विश्वास को नष्ट कर देंगे। गुरु–सेवा का और गुरु–कृपा ग्रहण करने का ढंग एक ही है कि हम गुरु के निर्देशानुसार चलें तथा हमारा आचरण ऐसा हो जिससे गुरुदेव प्रसन्न हों। वह केवल एक ही आदेश देता है कि राम नाम जपो, और यदि आप वैसे ही करते हैं, जैसे बताया गया है, आप गुरु की सर्वोत्तम सेवा करेंगे। भगवन्नाम की आवृत्ति से आपका हृदय पवित्र होता है और आप सबकी निष्काम सेवा करते हैं जो दुखी हैं, व्यथित हैं। यही है वास्तविक गुरु–सेवा।

(आनन्द आश्रम, केरल के स्वामी श्री रामदास जी महाराज का लेख जिसका अनुवाद परम पूजनीय श्री महाराज जी ने किया है।)

परम पूजनीय श्री महाराज जी के पत्रों के अंश

A Guru can only show the way, and guide. walk you have to yourself. Lord is the sole saviour. Pray wholeheartedly & He shall help you in all matters & everywhere. May Lord bless. Jai Jai Ram & all love.

गुरु अवश्य मार्ग दिखा सकते हैं और मार्गदर्शन भी, पर चलना आपको स्वयं है। तारने वाला एक मात्र प्रभु है। पूरी तन्मयता से आराधना कीजिए और वह हमेशा और हर परिस्थिति में आपकी मदद जरुर करेगा। प्रभु आप पर कृपा करें। जय जय राम।

Let me explain true Guru-sewa. The way you behave with me so you behave with all is Guru pooja/sewa liked by a true guru. Be good & do good. Loving Jai Jai Ram.

गुरु सेवा क्या है, मैं समझाता हूँ। गुरु सेवा अर्थात्, जैसा व्यवहार आप मेरे साथ करते हैं वैसा ही दूसरों के साथ करें। सच्चे गुरु को यही गुरु पूजा/ सेवा पसन्द है। अच्छा बनें और अच्छा करें। सप्रेम जय जय राम।

Dhayan is taught during diksha. Please do meditation daily. There is only one Guru i.e. the Lord Himself - Param Guru. All others are His forms. Worship Swami Ji Maharaj as His embodiment. Loving Jai Jai Ram.

दीक्षा के दौरान ध्यान सिखाया जाता है। कृपया रोज़ ध्यान में बैठें। गुरु सिर्फ एक है, और वह हैं, प्रभु स्वयं – परम गुरु। अन्य सभी उनके स्वरुप हैं। स्वामी जी महाराज की प्रभु रुप में आराधना करें। सप्रेम जय जय राम।

Thanks a lot for remembering a person like me on the auspicious day of Pujyapad Swami Ji's sakshatkar diwas. He is our Aadi Guru – Guru of us all. We are all Prasad eaters whatever Swami Ji blesses us with. All of us are his disciples. It is Baba's great greatness to accept us as his own. We are all indebted to him. Loving respects to both of you & all of you.

स्वामी जी के साक्षात्कार दिवस के पावन अवसर पर मुझ जैसे व्यक्ति को याद करने के लिए बहुत–बहुत धन्यवाद। वह हमारे आदि गुरु हैं– हम सबके गुरु। हम सब उनके शिष्य हैं और अपनी अनुकम्पा का प्रसाद देकर उन्होंने हमें धन्य किया है। यह बाबा की विशाल महानता है कि उन्होंने हम सबको स्वीकारा और अपनाया। हम सब उनके कृतज्ञ हैं। आप दोनों और आप सभी को सप्रेम आदर।

अनुभूतियाँ

'राम असम्भव को सम्भव कर सकता है'

जो भी मैं लिखने जा रही हूँ, यह मुझे महसूस होता है कि यह गुरुजनों की अकारण, अहैतुकी कृपा है। मैं 45 वर्ष की हूँ। 25 मई 2015 को बताया गया कि मुझे सिर और गले का तीसरी स्टेज का कैंसर है। एक के बाद एक टैस्ट, फिर रेडिएशन और कीमोथैरिपी 4 जून से शुरु हो गई। सात हफतों के रेडियेशन और साप्ताहिक कीमोथैरिपी के बाद, जब भी मैं श्रीरामशरणम् दर्शन करने आई, तो मुझे लगा श्री स्वामी जी महाराज ने मुझे कहा कि उन्हें सब पता है। मेरा यह विश्वास सुदृढ़ हुआ कि यदि हमारा विश्वास अटल हो तो राम असम्भव को सम्भव कर सकता है।

अगस्त के दूसरे हफते में प्रातः 3 और 4 बजे के बीच, मैं ध्यान में बैठी थी। मुझे ऐसा महसूस हुआ कि परम पूजनीय श्री महाराज जी हनुमान जी की तरह उड़ते हुए आए और मेरे चेहरे के पास से कुछ निकाल कर ले गए। तब मुझे कुछ समझ नहीं आया, पर बहुत हल्का महसूस हुआ। उसके बाद डॉक्टर ने मुझे तीन महीने का गैप दिया for preventive strong chemotherapy to start from November first week. लेकिन यह आश्चर्यजनक घटना घटित हुई, कि डाक्टर ने मेरा उपचार बंद कर दिया। स्कैन के बाद, मुझे रोग–मुक्त घोषित कर दिया। उनके अनुसार, मैं पूरी तरह ठीक हूँ। तब मुझे समझ में आया, कि श्री महाराज जी की कृपा से और राम नाम की साधना से मेरे गले की बीमारी पूरी तरह ठीक हो गई। मैं बिल्कुल स्वस्थ हूँ और अब रोग–मुक्त जीवन व्यतीत कर रही हूँ। श्री महाराज जी हम सब पर कृपा करें और हमें गुरुजनों में विश्वास एवं राम नाम की भक्ति का दान दें।

विभिन्न केन्द्रों पर सम्पन्न कार्यक्रम

मार्च से जून 2016

साधना सत्संग, खुले सत्संग एवं नाम दीक्षा का विवरण

- **कोल्हापुर**, महाराष्ट्र, में 6 मार्च को विशेष अमृतवाणी सत्संग एवं प्रवचन का आयोजन हुआ, जिसमें 46 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **नागदा**, मध्यप्रदेश, में 9 मार्च को विशेष अमृतवाणी सत्संग एवं प्रवचन का आयोजन हुआ जिसमें 785 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **बोलासा**, मध्यप्रदेश, में 10 मार्च को नवनिर्मित श्रीरामशरणम् का उद्‌घाटन हुआ जिसके पश्चात् 8089 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा गंहण की।
- **सरदारशहर**, राजस्थान, में 19 मार्च को विशेष अमृतवाणी सत्संग एवं प्रवचन का आयोजन हुआ जिसमें 1470 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **कठुआ**, जम्मू एवं कश्मीर, में 20 मार्च को एक दिवसीय खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिसमें 178 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **हरदा**, मध्यप्रदेश, में 20 मार्च को एक दिवसीय खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिसमें 275 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **मण्डी**, हिमाचल प्रदेश, में 10 अप्रेल को एक दिवसीय खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिसमें 178 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **शुक्रताल**, उत्तरप्रदेश, में 17 अप्रेल को विशेष अमृतवाणी सत्संग एवं प्रवचन का आयोजन हुआ जिसमें 113 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **रोपड़**, पंजाब, में 17 अप्रेल को विशेष अमृतवाणी सत्संग एवं प्रवचन का आयोजन हुआ जिसमें 34 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **हरिद्वार** में 18 से 23 अप्रेल तक पंचरात्री साधना सत्संग लगा। 18 अप्रेल को 12 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **पुडुचरी** में 22 अप्रेल को विशेष अमृतवाणी सत्संग एवं प्रवचन का आयोजन हुआ जिसमें 192 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **हरिद्वार** में 26 से 29 अप्रेल तक झाबुआ के साधकों के लिए तीन रात्री साधना सत्संग लगा।
- **लम्बासा**, फीजी, में 7 व 8 मई को खुला सत्संग लगा। सुवा में 14 व 15 मई को खुला सत्संग लगा। फीजी में बा, लम्बासा, सुवा, लौऊटोका व नाडी में नाम दीक्षा का आयोजन हुआ और 113 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **कण्डाघाट**, हिमाचल प्रदेश, में 22 मई को एक दिवसीय खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिसमें 21 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **फरीदाबाद**, हरियाणा, में 25 मई को श्री रामशरणम् के उद्‌घाटन की वर्षगांठ के उपलक्ष्य में विशेष अमृतवाणी सत्संग एवं प्रवचन का आयोजन हुआ जिसमें 78 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- श्रीराशरणम् **दिल्ली** में मार्च, अप्रेल व मई में 195 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **मनाली**, हिमाचल प्रदेश, में 14 से 16 जून को तीन दिवसीय खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिसमें 70 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **बिदर्भा**, डोडा, जम्मू कश्मीर, में 16 जून को एक दिवसीय खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिसमें 103 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।

निर्माणाधीन श्रीरामशरणम् की प्रगति

- **बीकानेर,** राजस्थान, में श्रीरामशरणम् का निर्माण कार्य लगभग पूरा हो गया है और उद्‌घाटन 10 जुलाई रविवार को होगा।
- **आदिवासी गाँव बांसगहन** (अब्दुल्लागंज), नज़दीक भोपाल, मध्यप्रदेश में श्रीरामशरणम् का निर्माण कार्य आरम्भ हो गया है। ■

Sadhna Satsang (July to December 2016)		
Haridwar	30 June to 3rd July	Thursday to Sunday
Haridwar	14 to 19 July	Thursday to Tuesday
Haridwar (Ramayani)	2 to 11 October	Sunday to Tuesday
Haridwar	11 to 14 November	Friday to Monday
Haridwar	25 to 28 November	Friday to Monday

Open Satsang (July to December 2016)		
Delhi	27 to 29 July	Wednesday to Friday
Kathmandu	30th July	Saturday
Rohtak	13 to 14 August	Saturday and Sunday
Rattangarh	27 to 28 August	Saturday and Sunday
Rewari	3 to 4 September	Saturday and Sunday
Bhareri	11th September	Sunday
Gurdaspur	16 to 18 September	Friday to Sunday
Sydney	24 to 25 September	Saturday and Sunday
Jammu	14 to 16 October	Friday to Sunday
Pathankot	22 to 23 Ocotber	Saturday and Sunday
Hissar	5 to 6 November	Saturday and Sunday
Fazalpur, Kapurthala	19 to 20 November	Saturday and Sunday
Hoshangabad	8 and 9 December	Thursday and Friday
Bhiwani	10 to 11 December	Saturday and Sunday
Surat	17 to 18 December	Saturday and Sunday
Sujanpur	24 to 25 December	Saturday and Sunday

Naam Deeksha in Other Centers (July to December 2016)		
30 July	Saturday	Kathmandu
14 August	Sunday	Rehti, Madhya Pradesh
04 September	Sunday	Rewari
11 September	Sunday	Bhareri
18 September	Sunday	Gurdaspur
25 September	Sunday	Jalandhar
25 September	Sunday	Sydney
16 October	Sunday	Jammu
23 October	Sunday	Pathankot
06 November	Sunday	Hissar
20 November	Sunday	Fazalpur, Kapurthala
09 December	Friday	Hoshangabad
11 December	Sunday	Bhiwani
18 December	Sunday	Surat
25 December	Sunday	Sujanpur

Naam Deeksha in Delhi, Shree Ram Sharnam (July to December 2016)	
19 July	Tuesday 4 pm
21 August	Sunday 10:30 am
18 September	Sunday 10:30 am
30 October	Sunday 11 am
25 December	Sunday 11 am

Purnima (July to December 2016)	
19 July	Tuesday
18 August	Thursday
16 September	Friday
16 October	Sunday
14 November	Monday
13 December	Tuesday

Crossword

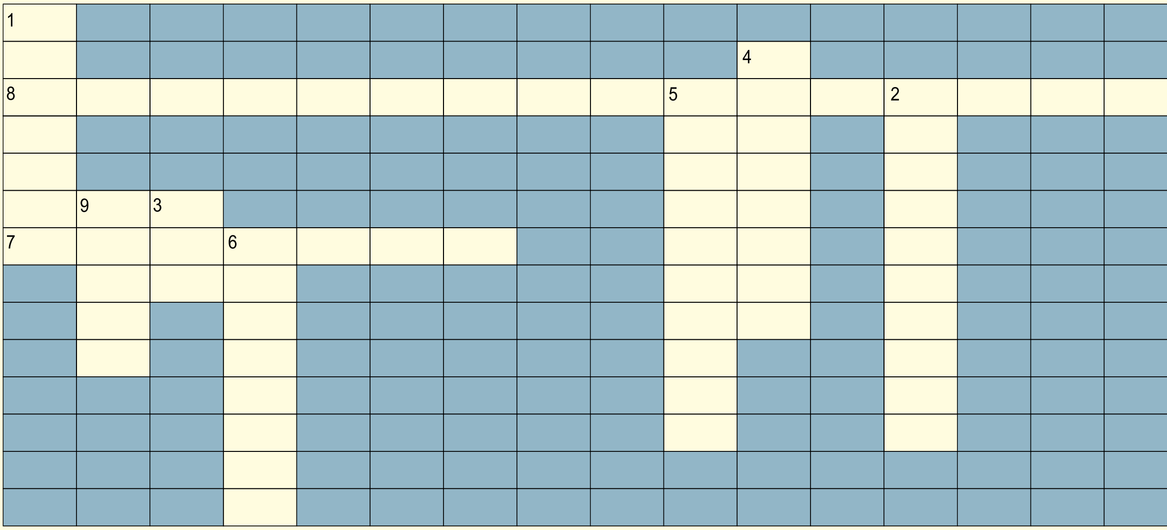

TOP TO DOWN

1. On whose birthday is Guru Purnima celebrated.
2. Name the chapter in which Param Pujyaniya Swami Ji Maharaj has written about the glory of Guru.
3. Who is Param Guru according to Param Pujyaniya Swami Ji Maharaj.
4. In which city was the first Sadhna Satsang held under the direction of Param Pujyaniya Swami Ji Maharaj.
5. In which city was Param Pujyaniya Swami Ji Maharaj born.
6. In which city was Param Pujyaniya Prem Ji Maharaj born.
9. From which institution did Param Pujyaniya Maharaj Ji do his doctorate

LEFT TO RIGHT

7. In which city was Param Pujyaniya Maharaj Ji born.
8. Where did Param Pujyaniya Prem Ji Maharaj work.

ANSWERS

Top to Down

1. Ved Vyas
2. Guru Mahima
3. Ram
4. Haridwar
5. Rawalpindi
6. Layalpur
9. AIIMS

Left to Right

7. Sialkot
8. Delhi Central Govt

यदि आप 'सत्य साहित्य' की इस प्रति को नहीं रखना चाहते,
तो कृपया इसे अपने स्थानीय केन्द्र या निकटतम श्रीरामशरणम् को लौटा दें।

प्रकाशक मुद्रक श्री अनिल दीवान द्वारा श्री स्वामी सत्यानन्द धर्मार्थ ट्रस्ट, 8 ए रिंग रोड, लाजपत नगर–IV नई दिल्ली. 110024 से प्रकाशित एवं रेव स्कैनस प्राइवेट लिमिटेड, ए–27, नारायणा औद्योगिक ऐरिया, फेज़ 2, नई दिल्ली 110028 से मुद्रित, संपादकः मेधा मलिक कुदेसिया एवम् मालविका राय

Publisher and printer Shri Anil Dewan for Shree Swami Satyanand Dharmarth Trust, 8-A Ring Road, Lajpat Nagar IV, New Delhi 110024 and printed at Rave Scans Private Limited, A-27, Naraina Industrial Area, Phase 2, New Delhi 110028. Editors: Medha Malik Kudaisya and Malvika Rai.

©श्री स्वामी सत्यानन्द धर्मार्थ ट्रस्ट, नई दिल्ली

ईमेल: shreeramsharnam@hotmail.com
वेबसाईट: www.shreeramsharnam.org

RNI No. "Applied for".